भारतीय ग्रामीण जीवन के विश्लेषण की समस्या

डॉ0 रामनारायण सिंह

ग्रामीण जीवन की वास्तविक प्रक्रिया अर्थात् जीवन–शैली पर गौर करें तो यह भिन्नता और भी जटिल रूप ले लेता है और सामान्य रूप से पूरे देश में जो एकता अथवा समानता हमें दिखलाई देती है, वह भी गड़बड़ा जाती है। वर्ण–व्यवस्था या जाति प्रथा को ग्राम्य ही नहीं, बल्कि सर्म्पूण भारतीय जीवन का एक देशव्यापी, अखिल भारतीय लक्षण माना जाता है, लेकिन इस प्रथा का यथार्थ रूप सब जगह एक–सा नहीं है। मोटे तौर पर तो सभी जगह यह प्रथा पायी जाती है और सभी लोगों, कम–से–कम हिन्दुओं को चार शास्त्रीय वर्णों में बाँटा जा सकता है। लेकिन प्रत्येक वर्ण के भीतर न जाने कितनी जातियाँ–उपजातियाँ होती हैं और इनके बीच परस्पर सम्बन्ध सभी जगह समान नहीं होते। इसके अतिरिक्त इन जाति–उपजाजियाँ के पेशे या काम–काज भी विभिन्न क्षेत्रों में अलग–अलग होते हैं। उनके पदसोपान भी भिन्न–भिन्न प्रकार के होते हैं। वर्णों तथा जातियों की प्रधानता तथा प्रभावशीलता भी प्रत्येक क्षेत्र में अलग ढंग की होती है।